प्राक्कथन

जीवन और साहित्य का संबंध चोली-दामन का रहा है। हिन्दी साहित्य में उपन्यास विधा को महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है। समाज जीवन का यथार्थ चित्रण करना उपन्यास की प्रमुख विशेषता रही है। प्रेमचंद ऐसे पहले कथाकार थे जिन्होंने साहित्य को सामाजिक उद्देश्य से जोडने के सच्चा प्रयास अपने कथा-साहित्य में किया। प्रेमचंद के कारण ही प्रथमत: ग्रामजीवन तथा ग्रामों के लोगों की समस्यासंबंधी उपन्यास लिखे गये। भारत में 75% लोग ग्रामों में रहते हैं। अत: 'ग्राम' ही हमारे भारत वर्ष की रीढ़ की हड्डी है। स्वाधिनता प्राप्ति के बाद हमारी अपनी सरकार आयी। अपना संविधान बनाया गया। लोगों के मन में ग्राम विकास के सुनहरे सपने फुलने-फलने लगे। सरकार ने अपनी ओर से ग्रामीण विकास के हेतू अनेक योजनाएँ और प्रकल्प कार्यान्वित किए। समाजसधारक, समाजसेवी संस्था, नेता आदि लोगों ने ग्राम विकास के लिए अपना योगदान दिया। इस कार्य में साहित्यकार भी पीछे नहीं रहे। उन्होंने ग्रामीण जीवन पर अनेक मौलिक साहित्यिक रचनाओं का निर्माण किया। ग्रामीण लोगें में अज्ञान, अशिक्षा, अंधविश्वास, रीति-रिवाज, रूढ़ि-प्रथा-परम्पराओं का प्रभाव होने के कारण उनका विकास नहीं हुआ। अत: ग्रामीण जीवन के सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक संदर्भों का अध्ययन करना ही इस लघु-शोध-प्रबंध का उद्देश्य रहा है।

साहित्य के निर्माण में साहित्यकार का महत्त्वपूर्ण योगदान रहता है। प्रेमचंद , रेणू, नागार्जुन, रामदरश मिश्र, भैरवप्रसाद गुप्त, शिवप्रसाद सिंह, डॉ. विवेकी राय आदि जैसे उपन्यासकारों ने ग्रामजीवन से संबंधित महत्त्वपूर्ण मौलिक कृतियों का निर्माण किया। हिन्दी उपन्यास विधा में नागार्जुन का विशेष महत्त्व रहा है। आँचलिक उपन्यासों में नागार्जुन महत्त्वपूर्ण है। उन्होंने ग्राम जीवन से जुडे उपन्यासों का निर्माण किया। उनके उपन्यासों में ग्रामीण जीवन के सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के दर्शन होते है।

नागार्जुन ने अपने उपन्यासों में ग्रामीण जीवन के साथ किसानों की स्थिति, शिक्षा प्रसार, अंधविश्वास, नारीजीवन, जातीयता, जमींदारों की नीति, गरीबी एव बेरोजगारी, राजनीति, चुनाव, भ्रष्ट नेता, प्रथा-परम्परा, रीति-रिवाज, त्यौहार, लोकगीत आदि पर प्रकाश डालते हुए उनका ग्रामजीवन से सम्बन्ध रहा है, उस पर सोचा है। नागार्जुन अपने जीवन की अंतिम यात्रा तक

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR.

सृजनरत रहे। भारत की ग्रामीण जनता की आकांक्षाओं और आशाओं को वाणी देते रहे है। अत: ऐसे साहित्यकार के साहित्यकृतियों का अध्ययन करना भी इस लघु-शोध-प्रबंध का उद्‌देश्य रहा है।

प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबंध के लिए 'रतिनाथ की चाची', 'बलचनमा', 'बलचनमा', 'नई पौध', 'बाबा बटेसरनाथ' आदि उपन्यासों का आधार लिया है। इन उपन्यासों के द्वारा ग्रामीण जीवन के सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक संदर्भो पर प्रकाश डाला है।

प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबंध पाँच अध्यायों में विभाजित है।

प्रथम अध्याय :-

'नागार्जुन का व्यक्तित्व और कृतित्व' इस अध्याय में नागार्जुन का व्यक्तित्व इसमें जन्म, बचपन, माता-पिता, परिवार, शिक्षा, नौकरी, विवाह, संतान और नागर्जुन के बाह्य व्यक्तित्व और आंतरिक व्यक्तित्व का अंकन किया है। उनके कृतित्व में उनके उपन्यास, काव्य,कहानी, यात्रा वर्णन, निबंध, संस्मरण, भाषण और पुरस्कार आदि को स्पष्ट करने का प्रयास किया है। अंत में निष्कर्ष दिए है।

द्‌वितीय अध्याय :-

'नागार्जुन के उपन्यासों में चित्रित ग्राम जीवन : सामाजिक संदर्भ' इस अध्याय में 'रतिनाथ की चाची', 'बलचनमा', 'नई पौध', 'बाबा बटेसरनाथ' आदि आलोच्य उपन्यासों में ग्रामीण जीवन के साथ 'ग्राम' तथा ग्राम संकल्पना को स्पष्ट करते हुए वहाँ के जीवन में स्थित अंधविश्वास, रूढि-परम्परा, देवी-देवता का प्रचलन, जातीयता, शिक्षा प्रसार, परिवार, रहन-सहन, नारी जीवन, किसानों की स्थिति और विकास योजनाएँ आदि के बारे में सोचा है। अंत में निष्कर्ष दिए है।

तृतीय अध्याय :-

'नागार्जुन के उपन्यासों में चित्रित ग्रामजीवन : आर्थिक संदर्भ' इस अध्याय में 'रतिनाथ की चाची', 'बलचनमा', 'नई पौध', 'बाबा बटेसरनाथ', आदि आलोच्य उपन्यासों में ग्रामीण जीवन की आर्थिक स्थिति, कृषि व्यवस्था, ग्रामीण लोगों के व्यवसाय, विभिन्न आर्थिक स्तर, जमींदारों की नीति, सरकारी योजनाएँ आदि को स्पष्ट किया है। अंत में निष्कर्ष दिए है।

BARR. B. LAS HEB KHA DEK AR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR.

चतुर्थ अध्याय :-

'नागार्जुन के उपन्यासों में चित्रित ग्राम जीवन : राजनीतिक संदर्भ' इस अध्याय में 'रतिनाथ की चाची', 'बलचनमा', 'नई पौध', 'बाबा बटेसरनाथ' इन आलोच्य उपन्यासों में चित्रित ग्रामीण जीवन की राजनीतिक स्थिति, राजनीति, अवसरवादी नेता, चुनाव, राजनीति सत्ता प्राप्ति का साधन, वर्तमान राजनीतिक स्थिति, राजनीतिक शोषण, भ्रष्ट नेताओं का परदाफाश और राजनीति में परिवर्तन आदि मुद्दों पर विचार किया है। अंत में निष्कर्ष दिए है।

पंचम अध्याय :-

'नागार्जुन के उपन्यासों में चित्रित ग्राम जीवन : धार्मिक एवं सांस्कृतिक संदर्भ' इस अध्याय में 'रतिनाथ की चाची', 'बलचनमा', 'नई पौध', 'बाबा बटेसरनाथ' आदि आलोच्य उपन्यासों में चित्रित ग्रामीण जीवन में धार्मिक एवं सांस्कृतिक पक्ष का महत्त्व, अंधविश्वास, रूढ़ि, प्रथा-परम्परा, मनौतियाँ पूजा, मंत्र-तंत्र, व्रत-उपवास, मृतक संस्कार आदि का चित्रण कियाहै तो सांस्कृतिक पक्ष के अंतर्गत रीति-रिवाज, तीज त्यौहार, मेले, खेल-कूद, लोकगीत आदि के महत्त्व के बारे में सोचा है। अंत में निष्कर्ष दिए है।

'उपसंहार' में प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबंध में उपलब्ध निष्कर्षो को समाकलित किया है।

मेरा यह सौभाग्य है कि, मुझे लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय के हिन्दी विभाग के डॉ. बी. डी. सगरे जी ने व्यस्त क्षणों अपना अमूल्य समय देकर बहुमुल्य निर्देशों के द्वारा ग्रामीण उपन्यास के अध्ययन तथा वहाँ के लोकजीवन के अध्ययन में मुझे उत्साह और प्रेरणा दी। उसके फलस्वरूप यह लघु-शोध-प्रबंध पूर्ण हो सका। अत: उनके प्रति औपचारिक आभार प्रदर्शन से तथा उनके स्नेह एवं सहयोग से ऋणमुक्त होना सम्भव नहीं है।

प्रस्तुत शोध कार्य में प्राचार्य सुहास साळुंखेजी, प्रा. जयवंत जाधव आदि के प्रति मैं कृतज्ञ हूँ जिन्होंने मुझे समय-समय पर बहुमुल्य मार्गदर्शन किया। प्रा. सौ. निर्मला माने छत्रपति शिवाजी महाविद्यालय, सातारा का विशेष ऋणी हुँ जिन्होंने हर समय मेरी सहाय्यता की।

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR.

प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबंध के कार्य में लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय, सातारा के ग्रंथपाल श्री. ए. एल. कुंभार, श्री. दामले, श्री. झणझणे तथा अन्य कर्मचारी और छ. शिवाजी महाविद्यालय, सातारा के लिपीक (ग्रंथालय) श्री. पावस्कर का विशेष ऋणी रहूँगा, जिन्होंने पुस्तकों को जुटाने में मेरी तत्परता से सहाय्यता की।

मेरे जीवन का श्रद्धा से सम्पन्न हर कार्य मुझे अपने माता-पिता के स्मरण के बिना अधूरा सा लगता है। अत: मेरे शोध-कार्य में सतत प्रेरणा देनेवाले मेरे पूज्य पिताजी जोतिराम बंडू चोरगे, माँ शालन जोतिराम चोरगे, आदि के आशीर्वाद के बल पर प्रस्तुत शोध-कार्य संपन्न हुआ। उनके प्रति मैं कृतज्ञ हूँ। साथ ही मेरी पत्नी धनश्री चोरगे, बेटी श्रद्धा तथा शिवाजी विश्वविद्यालय के मित्रगण आदि ने विशेष मदत की है। उनके प्रति मैं आभारी हूँ।

अंत में इस लघु-शोध-प्रबंध का संगणक टंकन अत्यंत सुचारू रूप से करनेवाले मे. रिलॅक्स सायक्लोस्टायलिंग, सातारा के श्री.मुकुंद ढवळे और श्री. कुलकर्णी ने अत्यंत तत्परता के साथ करके लघु-शोध-प्रबंध प्रस्तुति के लिए उचित योगदान दिया है। अत: मैं उनके प्रति आभारी हूँ।

(प्रशांत जोतीराम चोरगे)

स्थान : सातारा

तिथि : ३० जनवरी 2009

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR.